# ई-पुस्तक

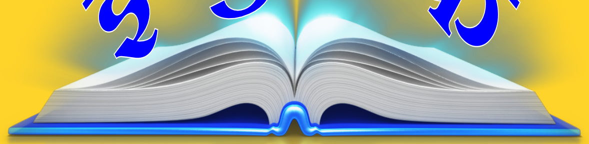

## अति दिवस की बधाई अति

# अध्यक्ष जी के स्नेह पुष्प

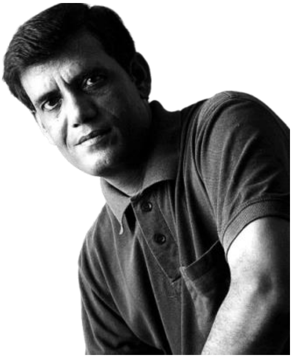

नमस्कार काव्यांचल,

साहित्य उपवन में नित नए अंकुर फूटते रहें, नित नए पौधे उगते रहें, नित नव पुष्प, नव कलिकाएं, नवल पात अपनी मौलिक लेखन रूपी ताजगी लिए इसे महकाते रहें, और इसी आशय को पुष्ट करने हेतु **काव्यांचल साहित्यिक संस्था** (रजि.) हमेशा अग्रणी रही है। संस्था का जन्म हुए दो वर्ष हो चुके है और दो वर्ष से काव्यांचल रूपी वाहन लेखन पथ पर चलने वालो को निरन्तर गति प्रदान कर रहा है। संस्था का पंजीकृत स्वरूप २ अप्रैल २०१९ को अस्तित्व में आया। इसके बाद काव्यञ्चलियों ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। विभिन्न नवीन साहित्योपयोगी आयोजनों का प्रबंधन करते हुए इसके कर्मठ दल ने अनेकों आयाम स्थापित किये है।

इन्ही प्रयासों के तहत एक **आयोजन २९ फरवरी २०२०** को करवाया गया **'अति दिवस पर बधाई अति'** प्रत्येक ३ वर्ष बाद आने वाला विशेष दिवस २९ फरवरी। इस आयोजन में अति दिवस पर प्रतिभागियों द्वारा बहुत ही सुंदर और उत्कृष्ट रचनाओं का सृजन किया गया। 'अति दिवस पर बधाई अति' के कुशल संचालक थे श्री शोभित गुप्ता जी। आयोजन का विषय चयन और परिकल्पना सभी का श्रेय शोभित गुप्ता जी को जाता है।

शोभित गुप्ता जी मूलतः रामपुर उत्तर प्रदेश से हैं। माता श्रीमती सुशीला गुप्ता और पिता स्वर्गीय श्री अशोक कुमार गुप्ता की संतान शोभित गुप्ता पेशे से आई टी विशेषज्ञ हैं। अपनी स्वयं की वेबसाइट www.ShobhitGupta.in पर लघुकथाएं, कविताएं, और समीक्षाओं का नियमित प्रकाशन करके लेखन के क्षेत्र में सक्रिय रहते हैं। StoryMirror, YourQuote, तथा प्रतिलिपि पर अक्सर नियमित लेखन करते हुए अन्य शौक जैसे कि, नई नई जगह घूमना, नये नये व्यंजन बनाना सीखना, फोटोग्राफी इत्यादि में भी महारत रखते हैं।

शोभित गुप्ता जी की कहानी एवं निबंध अनेक प्रतियोगिताओं में पुस्कृत हो चुके हैं। जर्मनी रेडियो Deutshe Welle पर एक लघुकथा तथा साउथ अफ्रीका के रेडियो Lotus Fm पर एक कविता का चयन हो चुका है। आपके हिंदी में दो और अंग्रेजी में चार साँझा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

कहते हैं कि पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं इसी तरह शोभित गुप्ता ने थोड़े ही दिनों में काव्यांचल टीम को अपनी प्रतिभा से प्रभावित किया है। इस आयोजन की विशेषता इस **ई-बुक** के संपादन हेतु आपको ढेर सारी बधाई । संस्था आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है तथा आशा करती है कि कालांतर में आप संस्था के अंतर्गत अनेक मौलिक सफल आयोजनों से साहित्य के नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

आयोजन के सभी प्रतिभागियों, काव्यांचल साहित्यिक संस्था के सभी व्यवस्थापक गण तथा शोभित गुप्ता जी को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए मुझे आपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

जय हिंदी, जय काव्यांचल

**रमेश चंद्र "विनोदी"**

**अध्यक्ष, काव्यांचल साहित्यिक संस्था (पंजी)**

# शोभित सन्देश

काव्यांचल के सभी सुधि सदस्यों को नमन!

मुझे इस आयोजन को मूर्त रूप देने की स्वीकृति देने के लिए अध्यक्ष महोदय और कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों का हार्दिक आभार। **29 फरवरी 2020** को करवाया गया **आयोजन 'अति दिवस पर बधाई अति'** अपने आप में एक विशिष्ट आयोजन था।

इस आयोजन की प्रेरणा मुझे अपने एक मित्र से मिली थी, उसका जन्मदिन 29 फ़रवरी को होता है। हर साल 29 फ़रवरी आती नहीं है तो कभी 28 फ़रवरी को तो कभी 1 मार्च को जन्मदिन मनाया जाता था। इस कारण लोगों को उसका जन्मदिन याद भी नहीं रहता था और 29 फ़रवरी होती भी थी तो कई बार लोग उसका जन्मदिन भूल जाते थे और उसको चार वर्ष का इंतज़ार करना होता था। उसको इस बात का हमेशा से मलाल है कि साल में इतने त्यौहार होते हैं, इतने दिवस हम मनाते हैं और जो दिन 3 साल के इंतज़ार के बाद आता है उस दिन कुछ नहीं होता। ऐसे न जाने कितने ही अन्य लोग इस दुनिया में होंगे जो इस तरह के हालातों से गुजर रहे हों तो यह विचार आया हम साहित्यकार ही क्यों न उनको कुछ विशिष्ट होने की अनुभूति कराएँ।

ऐसे विषयों पर लिखना आसान नहीं होता। अभी तक यह विषय साहित्य मंचो से लगभग गायब ही रहा है। सबसे बड़ी समस्या होती है कि साहित्यकारों को इन विषयों पर स्वयं का कोई अनुभव नहीं होता। कोई त्यौहार हो या कोई घटना या कोई समसामयिक विषय इन सब का अनुभव हमें घर-परिवार या समाचारों से जानकारी मिल जाती है। जरा सोचिए क्या आप किसी विदेशी से दिवाली या ईद पर भावपूर्ण कविता की उम्मीद कर सकते हैं? शायद नहीं!

इस आयोजन में शामिल सभी कलमकारों को मेरी ओर से बहुत बहुत बधाई है क्योंकि उन्होंने इस अछूते विषय पर अपनी कलम चलाई और इस दिन को यादगार बनाने में अपनी ओर से बहुत सुन्दर तरीके से योगदान किया। मेरा मानना है कि ऐसे आयोजन में हर कोई अपने आप में एक विजेता है।

आयोजन में प्रेषित रचनाओं का पारखी दृष्टि से आकलन कर समीक्षा तैयार करने हेतु निर्णायक **अनुराधा अमरनाथ पांडे जी** और **पूजा सिंह जी** का सहृदय अभिवादन करते हैं। आप दोनों के सहयोग बिना इस आयोजन का निष्कर्ष संभव नहीं था।

इस आयोजन में शामिल रचनाओं को एक पुस्तक में संकलित करने का उद्देश्य है कि कलमकारों की यह मेहनत व्यर्थ न जाए और ई-पुस्तक के रूप में लोगों को पढने के लिए उपलब्ध रहे।

जय काव्यांचल! जय साहित्य!!

**शोभित**

**आयोजक - आयोजन 'अति दिवस पर बधाई अति'**

# 29 फ़रवरी का इतिहास

साल के 12 महीनो में से सिर्फ फरवरी ही मात्र एक ऐसा महीना है जिसमें 28 या 29 दिन होते हैं। आजकल हम जिस कैलेंडर का इस्तेमाल करते हैं वह रोमन कैलेंडर पर आधारित है। पहले के कैलेंडर में महीनों की शुरुआत मार्च से होती थी। उस समय एक साल में 304 दिन होते थे और एक साल में सिर्फ 10 महीने ही होते थे।

कुछ समय बाद इस कैलेंडर में कुछ बदलाव किये गए। बदलाव के चलते साल में 2 महीने 'जनवरी और फरवरी' और जोड़ दिए गए। यह वर्ष चन्द्र वर्ष के अनुसार बनाये गए। चांद पृथ्वी का पूरा चक्कर 354 दिनों में पूरा करता है। इसलिए जनवरी और फरवरी को 28-28 दिन का रखा गया, लेकिन रोम के लोग 28 अंक को अशुभ मानते थे।

जिसके चलते उन्होंने जनवरी में 1 और दिन जोड़ उसे 29 दिन का बना दिया। इस बदलाव के बाद साल में 12 महीने और 355 दिन होने लगे। अब आप सोच रहे होंगे की फरवरी में 1 दिन क्यों नहीं जोड़ा ? रोम के लोग फरवरी को अशुभ मानते थे। इस महीने में यह लोग मरे हुए लोगो की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते थे।

लेकिन इतने बदलावों के बावजूद कैलेंडर में आने वाली मुश्किलें खत्म नहीं हुई। यह वर्ष अब मौसम के मुताबित नहीं बनाया गया था, क्योंकि इस वर्ष को चंद्रमा के अनुसार बनाया गया था। मौसम हमेशा सूर्य और प्रथ्वी के चक्कर के कारण बदलता है।

पुरानी कहानियों के अनुसार जुलियस सीजर ने 45 BC में कैलेंडर को चंद्रमा के अनुसार न रखते हुए सूर्य के अनुसार रखा। इस बदलाव के बाद हर वर्ष में 10 दिन और जोड़ दिए गए। इसके कारण अब हर वर्ष 365 दिन और 6 घंटे का हो गया।

क्योंकि सूर्य पृथ्वी का चक्कर 365 दिन और 6 घंटे में पूरा करता है। पीछे बचे इन 6 घंटो को हर साल बचा लिया जाता है और हर चौथे साल

मिला कर एक दिन फरवरी महीने में जोड़ दिया जाता है। इस वर्ष को हम लीप वर्ष कहते है।

ऐसा होने से हर चार साल में एक दिन अधिक हो जाता है, अतः प्रत्येक चार साल बाद फरवरी माह में एक दिन अतिरिक्त जोड़ संतुलन बनाये रखने की कोशिश की जाती है।

सामान्यतः यह माना जाता है कि जिस वर्ष की संख्या 4 से पूरी तरह विभाजित हो जाएगी उसमें फ़रवरी 29 दिन की होगी पर यह पूरी तरह सही नहीं है। '00' से अंत होने वाले सभी वर्ष, अधिवर्ष नहीं होते, 2000 अधिवर्ष था। 2000, 400 से भाज्य है। इसी प्रकार 1900, 1800, 1700 अधिवर्ष नहीं है  जबकि 2000, 1600, 1200 अधिवर्ष था।

इसके पीछे भी एक कारण है, दर असल पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाने में 365 दिन और करीब 6 घंटे से कुछ कम समय लगाती है। और हर चौथे साल अगर एक दिन जोड़ा जाता है तो हर चौथे शताब्दी वर्ष (हर में 3 दिन ज्यादा जुड़ जाते हैं) इसको सही करने के लिए ही शताब्दी वर्ष को 400 से विभाजित करते हैं। जैसे 2000 अधिवर्ष था, अगला 2400 होगा, बीच में 2100, 2200, 2300 नहीं होंगे।

कहानियों और ग्रंथो के अनुसार इसी कारण फरवरी में 28 दिन होते है और कुछ वर्षो में 29 दिन।

भारत के छठे प्रधानमंत्री और एक मशहूर स्वाधीनता सेनानी मोरारजी देसाई 29 फ़रवरी को 1896 में पैदा हुए थे।

29 फ़रवरी का दिन दुर्लभ बिमारियों से रोकथाम हेतु विश्व भर में मनाया जाता है।

# रागिनी नरेंद्र शास्त्री

पति का नामः- नरेन्द्र रमणलाल शास्त्री
पताः- देसाई वाडा, छेला फलिया, दाहोद
निवासः- दाहोद (गुजरात)
पिताश्रीः- डा. ब्रजेश चंद्र शास्त्री
मातुश्रीः- श्रीमती सर्व मंगला शास्त्री
जन्मतिथिः- २६.५.५७
शिक्षाः- एम.ए.पार्ट १(अर्थशास्त्र)
अभिरुचिः- संगीत और साहित्य

उपलब्धिः- वैसे तो मैं कोई कवि नहीं,मात्र और मात्र एक कलम की कारीगर हूँ।यूँ तो कविता का शौक तो बचपन से था,किंतु समय के समंदर से सहेज ही नहीं पाई थी।पर बस मार्च २०१७ से,आभासी फलक से जुड़ने के बाद,काव्यांचल साहित्यिक संस्था,आगमन एक खूबसूरत शुरुआत, काव्य संगम, खयाल, साहित्य अनुरागी,सृजन कुंज इत्यादि समूह के सौजन्य ने छंद रथी, जैस अनेकानेक उत्कृष्ट सृजन के प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया

*मुक्त काव्य १६-१६ मात्रिक*

अति-विशेष है, अति-तिथि उदया,
मंगलमय, अति-तिथि, परिणय हैं।
सद् भागी, बिरले, दिव्य मना!
उभया-जन को, अभिनंदन है।

चौगुनी, तंरगित मादकता,
सविशेष-दिवस, भुवि-शेषित है।
अविरम, अक्षुण्य, अचल पोषित,
अंतर-अभिनंदन, प्रेषित है।

**रागिनी नरेंद्र शास्त्री**
दाहोद(गुजरात)

## मंजू शर्मा

मैं मंजू शर्मा उड़ीसा (भुवनेश्वर) से,एक साधारण सी गृहणी हूँ। आरम्भ में साहित्य में कोई रूचि नहीं थी। फेसबुक से जुडने के बाद सबको पढना धीरे धीरे अच्छा लगने लगा । इससे पहले मैंने कभी कुछ नहीं लिखा था। पिछले साल से लिखने का शौक जगा और साहित्य में रूचि बढने लगी। मंजूषा लघुकथा संग्रह में मेरी लघुकथाओं को स्थान मिला। उड़ीसा से एक पत्रिका निकलती है,उसमें भी मेरी एक लघुकथा और एक आलेख छपा.... ऐसे ही छोटी-छोटी उपलब्धियाँ मिलती गईं। इन दिनों काव्यांचल के आयोजन में छंदों की जानकारी भी मिली। साहित्य के मर्मज्ञों की मदद से छंद महारथी का सम्मान मिला। अब साहित्य में गहराई से उतरने का मन है। अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया है।

सच्चाई और ईमानदारी ही मेरा गहना है और स्पष्टवादिता मेरा स्वभाव.. शायद ये हरियाणा की पैदाइश का असर है। मेरी शिक्षा भी हरियाणा से है।

*कविता जन्मदिन*

आदि करता जिद हर साल
माँ मुझे भी मनाना है जन्मदिन
सब तो हर साल मनाते
मैं क्यो चार साल में एकबार मनाता...?

माँ समझाती...
चार साल में जिनका जन्मदिन आता
वो बेटा लक्की कहलाता
खुशियों का अपार भंडार आता
सब घरवाले मिलकर खुशी मनाते,
सबका ढेरों आशीष मिलता,
दोस्त भी मिलकर तुझे रिझाते,
भेंट, उपहार, तोहफों की होती भरमार
आनंद मन में होता अपार।

आदि को जब समझ में आया
प्रेम से उसने सबको अपनाया
सारे मित्रों को घर पर बुलाया
खुशियों का घर आलम छाया

**मंजू शर्मा** (उडीसा)

## ऋतुदेव सिंह ' ऋतुराज'

राज्य: उत्तर प्रदेश
जन्मतिथि : ०१/०२/१९६०
जन्मस्थान : ग्राम- कौरारा खुर्द, पत्रालय-तिलियानी, जनपद- फिरोजाबाद, वर्तमान में गाजियाबाद में स्थापित
प्रकाशन: अमजॉन पर निम्न तीन पुस्तकें प्रकाशित 'मैं-कली', 'सदा शोडषी, 'नारी' तथा 'मन-मंथन' 'दादी-स्मृति' एवं 'बिखरे-मोती' प्रकाशन की प्रक्रिया में।

पुरुस्कार:
काव्य-मणि २०१९- काव्यांचल साहित्यिक संस्था द्वारा
साहित्यदीप भास्कर २०१९- साहित्यदीप महाकुम्भ द्वितीय २०१९
माह का सर्वश्रेष्ठ रचनाकार-पाठशाला काव्यगुंजन
'श्रेष्ठ रचनाकार' एवं 'श्रेष्ठ टिप्पणीकार' - साहित्य संगम संस्थान
'काव्य संगम आभासी मानक गुरुकल' , 'काव्यांचल', 'नवोदित साहित्यकार' 'कलम की यात्रा' 'पाठशाला' द्वारा अनेक सम्मान पत्र .

*विधा-नवगीत*

*मुखड़ा (वीर-छंद, 16,15)*

एक 'अतिदिवस' चार वर्ष में, लेकर आता है भगवान ।
जन्म दिया इसदिन क्यों मुझको, माँ से पूछ रहा नादान ??

*अन्तरा 1 (राधेश्यामी छंद)*

धूमधाम से छोटे भाई,
जन्मदिवस हर साल मनायें ।
मिलें खिलौने और बधाई,
बाट जोहते हम रह जायें ।।
हमने भी तो जन्म लिया है, हम भी चाहें खेल - खिलौने ।
क्या हम उनकी भाँति नहीं हैं, माता तेरे पूत सलौने ??

केक काटने का हम भी तो, मन में रखते हैं अरमान ।
एक 'अतिदिवस' चार वर्ष में, लेकर आता है भगवान ।।

*अन्तरा 2 (कुकुभ-छंद, 16,14)*

बेटे की सुन बात मात का,
पल भर को माथा घूमा ।
फिर पुचकार तुरत ही माँ ने,

बेटे का माथा चूमा ।।
बोली - "बेटा ! भाग्यवान तू, जो इस दिन जग में आया ।
चार गुनी है उम्र तुम्हारी", कह कर उसको बहलाया ।।

बैठ गई मन बात पुत्र के, मान लिया उसको वरदान ।
एक 'अतिदिवस' चार वर्ष में, लेकर आता है भगवान ।।

*अन्तरा 3 (सारललित-छंद, 16,12)*

बड़ा हुआ बनकर मुरारजी,
जिया शतक सालों तक ।
माँ वचनों पर किया भरोसा,
बिना किये कोई शक ।।
माना हर दिन को ही अपना, जन्म-दिवस सा ही दिन ।
दिगदिगन्त में ख्याति मिली अरु, बीता सुखमय जीवन ।।

गद्दी पा 'ऋतु', देश सँभाला, बन देसाई देशप्रधान ।
एक 'अतिदिवस' चार वर्ष में, लेकर आता है भगवान ।।

**ऋतुदेव सिंह ' ऋतुराज'**

**उषा झा**
जन्मदिवस- 8 अप्रैल
पैतृक घर - अररिया (बिहार रेणु ग्राम)
पिता - स्वर्गिय डॉ बासुकी नाथ शर्मा
माता - श्रीमति गंगा देवी
शिक्षा - पोष्ट ग्रेजुएट, बी एड
पेशा - व्याख्याता कई वर्षो तक
पति- डॉ शंभु कुमार झा (मुख्य चिकित्साधिकारी रूद्रप्रयाग)
सम्मान - कई मंच से सम्मान पत्र, प्रशस्ति पत्र और मेडल

उपलब्धि-
प्रकाशित रचना - एकल संग्रह- अंजुरी भर शब्द पुष्प
साझा संग्रह - कथा प्रदेश - कहानी,
लघु कथा संग्रह, पहाड़ी गूँज- कविता संग्रह ।

*गीत*

सुन्दर सुकुमार धरा आया ।
दिवस अलहदा भी मुस्काया।।

ममता हिलोर मचा रही थी ,
आंगन में कल कल झरने सी ।
मीठी लोरी धाम सजी थी ।।
आनन सबके वह दमकाया ।
दिवस अलहदा भी मुस्काया ।।

शनैः शनै बीते दिन रैना ।
प्रथम वर्ष वह अब पूर्ण किया ।
भिन्न दिवस ! माँ की नम नैना ।
जन्म दिवस जब नहीं मनाया ।।
दिवस अलहदा भी मुस्काया ।।

गिन गिन चार वर्ष पितु काटे ।
पुनित तिथि विशेष मिलान हुई ।।
केक नन्हें हीरो के काटे ।
मुदित बाल सेना घर आया ।।
दिवस अलहदा भी मुस्काया ।

सुन्दर सुकुमार धरा आया !

**उषा झा**

## सारिका विजयवर्गीय "वीणा"

पिता का नाम-"रमेशचंद्र विजयवर्गीय"
माता का नाम- "चंद्रकांता विजयवर्गीय"
पति का नाम- "आनंद विजयवर्गीय"
निवास स्थान- नागपुर ( महाराष्ट्र)
शिक्षा- ऍम.ए. (समाजशास्त्र)
उपलब्धियाँ- समाजशास्त्र में स्वर्णपदक

अलंकृत- आदरणीया सुमित्रा महाजन के द्वारा सम्मानित।
पसंद/रुचि- रुचियाँ तो बहुत है... पर सबसे खास बात हर कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना, एक अच्छा इंसान बनाना और हमेशा सिखना-सीखना,पढ़ना-पढ़ाना।

*वैवाहिक वर्षगाँठ*

२९ फरवरी को चढ़े
घोड़ी थे हम यार
आज दिल इस बात की
खुशी मना रहा था बेशुमार!...

करता हूँ मैं हर साल
इस दिन पत्नी के सामने
रूठने का, मचलने का
तड़पने का नाटक!....

समझाता हूँ उसे मैं,
चाहता हूँ हर साल शादी की
सालगिरह मनाऊँ ले जाऊँ तुम्हें
हरी-भरी वादियों में घुमाने!...

तोहफ़े ढ़ेर सारे मँहगे से महँगे
डाल दूँ तुम्हारे आँचल में
हर साल शानदार!....

पर जानू फरवरी २९ को हम थे ब्याहे
तो चार साल में ही सही ऐसी
वैवाहिक- वर्षगाँठ मनायेंगे

सबको दाँतो तले उँगली दबवायेंगे!...

समझा पत्नी को होता
मन ही मन मैं तो खुश।
हो पत्नी के साथ थोड़ा सा फनी
ली बचा मैंने तो अपनी मनी
चार साल तक रहेगी अब शांति
उसके बाद देखा जायेगा
फिर नया बहाना ढूंढा जायेगा!...

२९ फरवरी तेरा शुक्रिया,
तेरी मेहरबानी अगर तू न होती
और न होती इस दिन मेरी शादी
तो खाली जेब के साथ मेरी
अंतरात्मा भी रो रही होती!....
अंतरात्मा भी रो रही होती!....

**सारिका विजयवर्गीय "वीणा"**

**प्रतिभा चौहान**

पिता का नाम- श्री धर्मेन्द्र कुमार
माता का नाम- श्रीमति दया
देवी
उपलब्धि- काव्यांचल आयोजन "कलम का सलाम देश के नाम" में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए सम्मानित

*वैवाहिक वर्षगाँठ कविता*

आने से तेरे मेरी जिंदगी मुस्कराई थी
खुशियों की महक हर जगह छाई थी
आज के दिन यह शुभ बेला आई थी
वादों की कसम जब तुमने खाई थी

बंधे थे हम उस पवित्र बंधन में
साथ पाया था तेरा हर जन्म में
निभाऊं साथ तेरा हर सुख दुख में
ख्वाब पूरा करेंगे मिलकर जीवन में

तुम्हारे  प्रेम से नित संवरती रही
सहारे तुम्हारे नौका मचलती रही
जिंदगी की रफ्तार संग तेरे चलती रही
मेरी खुशिया बिन तेरे अधूरी रही

विश्वास, ईमानदारी से रिश्ता निभाएंगे
चार साल बाद फिर यह दिन मनाएंगे
रिश्ते को अपने मजबूत बनाएगें
एक दूजे संग प्यार के दीप जलाएंगे

**प्रतिभा चौहान**
मुरादाबाद

## निहारिका ओम प्रकाश झा

पिता जी का नामः स्व.श्री शशिभूषण ठाकुर
माता जी का नामः श्रीमती वन्दना ठाकुर
पताः खैरागढ़,
राजनांदगांव(छ.ग.)
उपलब्धियाँ:
फेस बुक पर विभिन्न साहित्यिक समूहों में सम्मानित।
विश्व हिंदी रचनाकार मंच द्वारा अटल साहित्य गौरव सम्मान सन् 2019

## *दी के जन्म दिवस की बधाई*

तारीख थी वो उनतीस और माह फ़रवरी का।
अधिक वर्ष का जो दिवस अधि निराला।
जब जन्म ले के आईं ,खुशियाँ थीं घर में छाईं।।
पर दिन था वो महत्तम,हर साल ना है आता।।
ये आपका जन्म दिन रह रह के है सताता।
ज्यों बादलों में जैसे सूरज सा छिप है जाता।
जब देखतीं मनाते सब जन्म दिन है अपना।
मायूस आप होतीं क्यों छिप गयी वो तारीख।
रह रह के प्यार आता उस रूप सलोने पे।

इक बात दिल में रहती
जो आपसे हूँ कहती।
येआपकी उमर पे तरुणाई अब है आई।
क्योंकि मना रही हैं ये जन्म दिवस चौदह!
ये जन्मदिवस चौदह!!
अन्तःकरण से देती हूँ आपको बधाई।
येआपकी उमर पे हरदम रहे तरुणाई।।

**श्रीमती निहारिका झा**

## नयना कक्कड़ कपूर

पिता नाम: श्री अनूप कक्कड़
माता नाम: श्री मति डॉ सरिता कक्कड़
पता: स्टार चौराहा निकट डॉ प्रदीप आई क्लिनिक
विशेष: लोकसंगीत कलाकार, गायन, वादन (तबला), कथक नृत्य शिक्षिका
साहित्यिक उपलब्धि : नई लेखनी, प्रणाम काव्यधारा, अध्यात्मिमिक काव्य धारा ,नवीन कदम (समाचार पत्र) आदि में कविताओं को स्थान मिला।

## *29 फरवरी*

एक सुबह ऐसी जो आये,
चार साल में एक बार,
पैदा होता जो इस दिन,
वो ना बढ़ता हर साल,
चार साल में एक बार ही
मनाता अपना जन्मदिन।

ब्रहमांड का अनोखा नियम,
जिसकी ना कोई मिसाल,
सूरज की परिक्रमा लेती,
पृथ्वी छ: घंटे ज्यादा हर साल,
तब चार साल में बनता ,
ये अनोखा दिन महान।

**नयना कक्कड़ कपूर**

**भगत सिंह राणा ' हिमाद '**

पिता का नाम - स्व0 श्री प्रताप सिंह राणा
माता का नाम - श्रीमती कलमी देवी
संप्रति - अध्यापन
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संसथान द्वारा - भावराव देवरस सम्मान ,
काव्यांचल साहित्यिक संसथान द्वारा - साहित्य छंद रथी सम्मान , 'अब की बारी उमा भंडारी' श्रेष्ठ साहित्य सम्मान , 'ढाई आखर प्रेम के' में श्रेष्ठ सृजन साहित्य सम्मान ," कलम का सलाम देश के नाम " में श्रेष्ठ सृजन सम्मान
शान फिल्म मुंबई द्वारा प्रसस्ति पत्र, नर्मदा प्रकाशन द्वारा आत्मसृजन ,उजेश, अभिजना, अभीति साहित्य सम्मान,
विद्यालय पत्रिका "बाल मन " का संपादन , नर्वदा प्रकाशन में संपादन मंडल का सदस्य।
ग्राम – भंग्यूल, तपोवन (जोशीमठ ), चमोली - उत्तराखंड

## *सादी की सालगिरह*

चार साल बाद आज वह दिन आया।
पत्नी संग शादी की वर्ष गांठ मनाया॥
सारे मित्रों को अपने घर पर बुलवाया।
हर्षोल्लास घर पर है आज छाया॥

हर वर्ष मित्रों के सालगिरह में जाता।
एक टीस सी अपने मन में हूँ मैं पाता॥
बधाई औ उपहार मित्रों को दे जाता।
अपने को ठगा सा हूँ मन में पाता॥

अधि वर्ष में यह अति दिवस है आया।
प्रसन्नता मेरे तन - मन में समाया॥
काश ! हर वर्ष यह दिवस आ जाता।
मैं भी बधाई और मंहगे उपहार पाता॥

पत्नी के संग खुशी के साज सजाता।
हर वर्ष शादी की सालगिरह मनाता॥
उसे खुशी का मैं अहसास कराता।
और मन ही मन मैं भी हरषाता॥

नहीं जीवन में रजत जयंती आएगी।
ऐसी मधु ऋतू नहीं कभी छाएगी॥
आज तो बहुत मिली मुझे बधाई।
चार साल के बाद है यह बेला आयी॥

**भगत सिंह राणा 'हिमाद'**

## **बृजमोहन रणा 'कश्यप'**

पिता स्व श्री हरगोविन्द जी रणा
माता श्रीमती स्व श्री नर्मदा बेन रणा
शहर अमदाबाद ,गुजरात
जन्म दिनांक 29 .11 .1955 .
जन्म स्थल धंबोला जिला डूँगरपुर ,राजस्थान
शैक्षणिक उपलब्धि बी .ए .बी .एड सेवानिवृत्त वरिष्ठ अध्यापक

- कांव्याचल साहित्यिक संस्था द्वारा .'काव्य रथी ' का सम्मान
- साहित्य संगम संस्थान नयी दिल्ली द्वारा' श्रेष्ठ टिप्पणीकार सम्मान', 'समीक्षाधीश सम्मान'  और 'हिन्दी साधक '
- साहित्यदीप द्वारा .'साहित्यदीप प्रज्ञा' का सम्मान
- कांव्याचल मंच द्वारा .'काव्य साधक ' का सम्मान

*विधा कविता*

सौभाग्यशाली का जन्मदिन आता ।
चार साल में एक बार सब मनाता ।।
खुशियाँ अपार लेकर यह आता ।
धरवाले इसकी राह देखते कयी बार ।।
भले सब लोग मनाते जन्मदिन हर साल ।
पर चार साल बाद जन्मदिन मनाता भाग्यशाली एक बार ।।
ढेर सारे आशिर्वाद मिलते एक साथ ।
सबकी दुंआएँ ,शुभकामनाएं मिलती एक बार ।।
मित्रों को खुशी व चाह रहती बार बार ।
भेंट ,उपहार अच्छें मिलते इस बार ।।
खाने पीने का उत्साह दिखता ज्यादा इस बार ।
रिश्तेदारों की शुभकामनाएं मिलती ढेर सारी इस बार ।।
ऐसे लोग जीते हजारो साल ,क्यूंकी इनको मिलती दुंआ बेसुमार ।
धन की कमी नही रहती इस बार ।।
खुल्ले दिल से धन लुटाते इस बार ।
हर साल जन्मदिन मनाते लोग बोर हो जाते कयी बार ।।
चार साल में जन्मदिन मनाते हरषोल्लाष से एक ही बार ।
इस दिन की राह सभी बेसब्री से करते एक बार ।।

**बृजमोहन रणा ,कश्यप**

## पुष्पा तिवारी
## दिल्ली

पिता नाम :- श्री द्वारका प्रसाद भारद्वाज
माता नाम:- स्व. कमला देवी भारद्वाज
साहित्यिक गतिविधियाँ अभी ज्ञान अर्जित कर रही आप सभी से ।
उपलब्धियाँ काव्यप्रवर , छन्दरथी सम्मान और सम्मान स्मृति उड़ान में गद्यलेखन पर ,काव्यांचल पर वार्षिक प्रतियोगिता काव्यांचल साहित्यिक कलम गुनगुनायेगी।
काव्य साधक , लेखन प्रतियोगिता में काव्यांचल

## *जन्मदिन की बधाई*

जन्मदिन चौथे नही, हरसाल मैं मनाऊँ,

मेरे भैया दिन ये आए चाहे चौथे साल
मैं तो जन्म दिन मनाऊँ तेरा हर साल

हाथों से मीठा बना के तुझको।
खिलाऊँ रोली अक्षत तिलक।।
लगा चौक पूर के प्रेम से पटले।
बिठा मस्तक मैं सजाऊँ,प्यार।।
न्योछावर कर गले तुझे लगाऊँ।।

जन्मदिन चौथे नही, हरसाल मैं मनाऊँ,

हर फरवरी उपहार लिए मैं करती।
तेरा इंतजार, मेरे भैया का आये।।
जन्मदिन दूँ उस को मैं ये उपहार।
प्रीत की डोर बंधी आस की भैया।

जन्मदिन चौथे नही, हरसाल मैं मनाऊँ,

मेरे शुभ दिन शुभ घड़ी मेरे पीछे
पीछे बचपन सा हँसता तू डोले ।।
अब आ जाओ जल्दी इसी बार ।
आया जन्मदिन का चौथा साल ।।

जन्मदिन चौथे नही, हरसाल मैं मनाऊँ,

प्रेम प्रीत का सुन्दर प्यार उपहार ।
उनत्तीस जोड़ दो,नौ ग्यारह होते।
उपहार तुझे हर साल खुशी से मैं।
भिजाऊँ, जन्मदिन हर साल ही मैं दोनो मनाऊँ।।

जन्मदिन चौथे नही, हरसाल मैं मनाऊँ,

भैया तेरा जन्म दिन के साथ ही।
मैं हर उनत्तीस वालों का जन्मदिन
शादी सालगिरह खुशी से मनाऊँ।
आज मेरे अपनों को दूँ उपहार।।

जन्मदिन चौथे नही, हरसाल मैं मनाऊँ,

**पुष्पा तिवारी दिल्ली**

## **रीतू गुलाटी... ऋतंभरा**

पिता का नाम..स्व.सुन्दर लाल

माता का नाम .स्व..चन्द्र

कान्ता देवी

जन्म दिंनाक.26 अगस्त

जन्म स्थान..सहारनपुर

शैक्षिणिक उपलब्धियाँ

- शिक्षा.M.A हिंदी लिटरेचर(मेरठ यूनिवर्सिटी)
- अंबाला कहानी लेखन से डिप्लोमा, (कहानी लेखन)
- रूचियां..पढना पढाना व साहित्य सृजन।

साहित्यिक उपलब्धियाँ

ढेरो सम्मान पत्र और अवार्ड़ ।

कालू का जन्म दिन 29 फरवरी को
लीप इयर पर आता जब।
उदास मन से दोस्तो को बताता।
देख -देख दुखी हो जाता वो
जब दोस्त बांटते टोफियां।
बड़ा हुआ जब कालू ---
लीप इयर का महत्व समझ आया,
अब वो उदास नही होता।
हर लीप इयर पर उसके माता
जन्मदिन मनाते खुशी खुशी।
अतिदिवस पर उसको मिली बधाई।।

**रीतू गुलाटी..ऋतंभरा**

## *बधाई गजल*

*【1222×3+122】*

मना ले साथ मेरे खूब खुशियाँ दो दिनों तक,
दिनों की बात यादों में बसा ही लो दिनों तक।

कटेगी केक मेरी झोपडी में लौ जलाने ,
शमां रौशन करे ऐ लीपियर वालों दिनो तक।

चढ़ी बुखार बढी धड़कन चलो नाचो नचाओ,
जश्न माने करो हराम नींद दोस्तो दिनों तक।

मनाते डूब बार बार उधार खातों में बाकी,
लगी है लॉटरी कुदरत तेरे हाथों दिनों तक।

बधाई 'राज देता लीपियर वालों को दिल से,
मुबारक आपको हरेक कदम जीतो दिनों तक।

**रामा श्रीनिवास राज**

चार बरस में आता है दिन ये एक बार।
29 फरवरी तारीख ये कर लो इंतजार।।
मुश्किल से आता है दिन होता जनम किसी का जो।
शादी की तारीख़ भी आता नही कभी हर बार।।
छोटा बहुत महीना है ये जल्दी ख़तम है होता।
बढ़ा एक दिन 29 का बीते साल चार।।
29 दिन का है ये महीना मुश्किल से ये आया।
शुभ दिन इसको मान लो जैसे हो कोई त्योहार।।

**माधुरी मिश्रा**
वाराणसी

**अनिता शरद झा आद्या**

पिता का नाम :-स्व .विश्वेंद्र नाथ ठाकुर
माता का नाम :- क्रांति ठाकुर
शहर :- रायपुर छत्तीसगढ़
साहित्यिक परिवार में 24 जनवरी को जन्मी, ६२ वर्षीया, गृहणी, रायपुर, छत्तीसगढ़ में निवासरत
शैक्षणिक उपलब्धि :- स्नातक
साहित्यिक उपलब्धि :- पहली प्रकाशित लघुकथा दूसरी संस्कार संस्कृति ,लाल चौरा ,चुलबुली नानी की रंगीन फुलझड़ियाँ , बाल साहित्यकार दिविक रमेश ,लालित्य ललित आदि आदि से सम्मान प्राप्त
लघुकथा, कहानी व कविता लेखन कार्य में लगभग बीस वर्षों से सक्रिय |

एक शहीद की पत्नी एक देशभक्त अधिकारी की माँ जिसका बेटा रणभूमि में शहीद तिरंगे ताबूत में २९ फ़रवरी को लौटा हैं। अश्रुपूरित उदगार देशप्रेम के साथ

मातृभूमि की रक्षा करने का अभिमान जगाओ
आतंकवाद निर्भया जैसे हत्यारों को जड़ से बहार संयम नैतिकता का पाठ
मन के अंदर से निकाले की कला ही सच्ची श्रद्धांजली होगी
जब नियत में ही खोट आ जाए तो क्या कहेंगे !
ये इंसान नहीं ! कोई आतंकवादी ही हो सकता हैं !
जो दरिंदो की भाँति जंगली भेड़ियों की तरह ,
इंसानो की इंसानियत को बदल हैवान बन
देश विश्व में छाये हुए हैं ! ना इनका कोई ईमान हैं !
ना मझहब जो फ़ौलादो औलादो में अंतर ही नहीं समझते जिस दिन ये सही मतलब समझ जाये
उस से दिन ही आतंकवाद का ख़ात्मा हो जायेगा
आतंकवाद दीये की रोशनी की तरह एक दूसरे कीओर बढ़ अपने ही हाँथों से शहर सारा खेत जंगल तबाह कर पूछता हैं यें आग किसने लगाई इस समस्या का हल जड़ से ख़त्म करने का हौसला हिम्मत एकजुटता से आगे बढ़ आतंक को वादियों से ख़त्म कर अमावस की काली रात को दीये की रोशनी से जगमगाकर हर दिल को जीतना हैं
जिसने जाति धर्म भेद भाव का कोई स्थान ना हो एक अच्छे सच्चे देश भक्त बन अपना आधार कार्ड स्वयं बनाये जिसकी हस्ती जीवन मरण के साथ जुड़ी रहे यमराज भी आधार कार्ड देख ही एंट्री करें " जिसमें मानवता की पाठशाला हो मानवता की सीख हों "

*शहीदों के नाम याद - भारत माता की पुकार*

भारत माता का फ़र्ज़ निभाना होगा !
सच्चे सपूत इन्सान बनाना होगा !
बदले की हैं आग जो भड़क उठी हैं
इस माटी का मोल चुकाना होगा !

इंसानो की भूख प्यास बना अब हैवान खड़े हैं
इन्हें फाँसी के फ़ँदो में चढ़ाना होगा !
अब आश्वासन भाषा बोली से नही चाहिये !
सांत्वना वीर पुरस्कार
सच्चे मन की आस जगाना होगा !

लहलहाती भूमि की खड़ी फ़सलों रोंदा है जिसने
मानवता की सीख जागना होगा
ईमान धर्म का पाठ सिखाना होगा
अमन शान्ति का चैन बनाना होगा

सच्चे सपूतों की प्यास ही
बलिदानो का बदला होगा !
हिंदुस्तान के मँजहब को
पाक साफ़ दिखाना होगा !
भारत माता का गौरव इतिहास बनाना होगा !

**अनिता शरद झा आद्या**

# चलते... चलते...

चार वर्ष में एक बार ही वर्षगांठ मनाते हैं
विवाह और जन्मदिवस अति दिवस में आते हैं
हम तो सबको प्रति वर्ष कुछ न कुछ पकड़ाते हैं
हाय हमारा भाग्य चार वर्ष बाद उपहार पाते हैं..
**शुभेन्द्र जैसवाल**

वो चार साल बूढ़े होते हैं
आप 3 साल अधिक जवां रह पाते हैं।
हम तो सोचते हैं काश!29 फरवरी को पैदा हुए होते।
बच्चों की जगह अभी तक खुद स्कूल पढ़ रहे होते।
अगला जन्मदिन आने तक न छोड़ते एक क्लास जनाब।
हम अभी कितने छोटे हैं समझाते सबको हिसाब।
**मणि अग्रवाल**

काश हम भी 29 फरवरी में जन्मे होते
चार वर्ष बाद उपहार इकट्ठे मिल गए होते
हम भी उत्साहित हो बहुत
बड़े पैमाने में मना रहे होते,
फ़ोटो सब के साथ खिंचा रहे होते ,
काश हम भी चौथे वर्ष में केक काट रहे होते
**पुष्पा तिवारी**